© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 गार्गी ओझा
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

मधु वर्मा
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

शोध आलेख सार– प्रस्तुत अध्ययन वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति के अनुसार, शोध में वर्णनात्मक अनुसन्धान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि से पूर्ण किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में इलाहाबाद जनपद के वित्तीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। अध्ययन में वित्तीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत् 50–50 शिक्षकों का चयन किया गया है। मूल्यों के अध्ययन के लिए डॉ0 अमित अब्राहम एवं डॉ0 रश्मि पन्त द्वारा निर्मित 'संवैधना का मूल्य मापनी' का प्रयोग किया गया है। मूल्य मापनी नौ मूल्य में विभाजित किये गये है, जो निम्नवत् है– धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवाारिक प्रतिष्ठा मूल्य। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष के रूप में पाया कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के धार्मिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समान सामाजिक मूल्य निहित है।
2. 0.01 सार्थकता स्तर पर वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के लोकतांत्रिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात समान लोकतांत्रिक मूल्य निहित है।
4. वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाया गया।
5. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के आर्थिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

8. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः निष्कर्षतः वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

की–वर्ड– वित्तपोषित, स्ववित्तपोषित, महाविद्यालय, शिक्षक, मूल्य

प्रस्तावना

प्राचीनकाल में गुरूकुलों में बालकों के ज्ञान व अनुभव प्राप्त करने पर बल दिया जाता था। उस समय छात्र अर्जित योग्यता का प्रदर्शन विद्वानों की सभा में शास्त्रार्थ द्वारा किया करते थे। उस समय की शिक्षा प्रणाली में शिक्षक प्रमुख था परन्तु आधुनिक शिक्षा प्रणाली में छात्र प्रमुख हो गया है। प्राचीन काल में श्रवण–मनन, निदिध्यासन शिक्षण की प्रक्रिया थी तथा शिक्षक प्रशिक्षण का कोई विधिवत् विधान नहीं था, परन्तु आज की शिक्षा प्रक्रिया अनेक स्तरों में विद्यमान है, प्रत्येक स्तर के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के शिक्षकों की आवश्यकता होती है।

एक कुशल शिक्षक अच्छे छात्र एवं नागरिक का निर्माण करता है। शिक्षक वास्तव में एक ऐसा कारीगर होता है, जिसके हाथों से ही देश की नींव का निर्माण होता है। एक कुशल शिक्षक ही किसी देश को उन्नति के राह पर ले जाने में सक्षम होता है, जबकि इसके विपरीत एक अकुशल एवं रुग्ण व्यक्तित्व का शिक्षक किसी भी देश को अवनति के द्वार पर ही ले जाता है। एक शिक्षक अपना कार्य पूर्णनिष्ठा, लगन एवं परिश्रम से करते हुए योग्य भावी पीढ़ी का निर्माण कर सकें इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक में वांछित मूल्यों एवं शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास हो। शिक्षण को एक कला माना जाता है और कला को उत्पन्न किया जा सकता है, यह तो जन्म होती है।

एक शिक्षक जो राष्ट्र निर्माता होता है, उनमें विभिन्न मानवीय मूल्य जैसे दया, करुणा, सहयोग, सौन्दर्यात्मकता, भातृत्व, सामंजस्य, सादगी, मितव्ययिता, सह–अस्तित्व की भावना एवं प्रेम का होना अत्यन्त आवश्यक है। भारतीय साहित्य में दया को सामाजिक जीवन का आधार बताया गया है। शैक्षिक वातावरण को स्वस्थ व सुन्दर बनाने में शिक्षक की महती भूमिका होती है। अतः एक शिक्षक में सौन्दर्यानुभूति का होना अत्यन्त आवश्यक है। सत्यम् शिवम् एवं सुन्दरम् जैसे मूल्य की भावना के द्वारा उनके शिक्षण व्यवसाय के अभिवृत्ति को सकारात्मक रूप प्रदान कर सकती है जिसके द्वारा वह विद्यार्थियों में बिना भेदभाव के कुशलता से अध्यापन कार्य समर्पित हो सकता है।

सभी मनुष्य शारीरिक रूप से लगभग एक समान ही होते है किन्तु शिक्षा के द्वारा ही उनमें परिवर्तन परिलक्षित होता है। प्राचीन काल से ही मानव अपने ग्रन्थों के माध्यम से मूल्य शिक्षा पर जोर देता रहा है। अपने को सुसंस्कृत बनाने के लिए शिक्षा का सहारा लिया है प्राचीन काल से मध्य कालीन भारत में भी मूल्यपरक शिक्षा एवं कार्यों पर बल दिया जाता रहा है। परन्तु मध्यकाल में अनेक धर्मों एवं संस्कृतियों के आगमन के कारण भारत के लोगों में मूल्यों की कमी आयी परन्तु 19वीं शताब्दी में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, जापान आदि देशों में हुए औद्योगिक क्रान्ति एवं तकनीकी विकास ने मानव मूल्यों में चमत्कारिक परिवर्तन किये हैं। मानव के जीवन में मूल्यों में चमत्कारिक परिवर्तन किये है। मानव के जीवन में आर्थिक महत्त्व को ज्यादा जरूरी समझा जाने लगा है। अर्थ का महत्त्व बढ़ जाने के कारण व्यक्ति अर्थ जुटाने में लगा रहता है तथा अर्थ का प्रयोग भौतिक सुख–सुविधा एवं ऐसो–आराम के लिए होता है भारत के लोग भी इन परिणामों से प्रभावित हुए है। अंग्रेजी हुकूमत ने जहाँ हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को क्षित्–विक्षत् किया वही आज की तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा पद्धति ने हमारी नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर आधारित शिक्षा व्यवस्था को लगभग समाप्त ही कर दिया है।

आज मूल्यों के ह्रास के कारण मानव व्यवहार अनिश्चित सा हो गया है। समाज में व्यक्ति का विकास एक दूसरे से उठता जा रहा है प्रत्येक व्यक्ति तनाव में जी रहा है। चारों ओर भ्रष्टाचार का बोल–बाला है। मंत्री, जन–प्रतिनिधि, अधिकारी कर्मचारी सभी भ्रष्ट आचरण में लिप्त है जो जहाँ भी मौका पा रहा है एक दूसरे का शोषण करने में लगा है। मंत्री, नेता, देश के धन को लूटने में लगे है यह सब कृत्य मूल्यों के ह्रास के कारण हो रहा है।

मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है। मूल्यों के विकास में सर्वप्रथम परिवार तत्पश्चात् विद्यालय एवं समाज अहम् भूमिका निभाते है। मूल्य के आधार पर ही मानव अपना

जीवन दर्शन बनाता है। मूल्य मानव जीवन के अर्थ, उच्चता एवं श्रेष्ठता प्रदान करती है। शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकास के लिए मनुष्य में मानवीय गुणों का होना अति आवश्यक है। विद्वानों का मानना है कि शिक्षा की तीन प्रक्रिया शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुदेशन से मानव मूल्यों का निर्माण सम्भव नही हैं। मूल्यों के निर्माण हेतु मूल्यों को आत्मसात करना जरूरी है।

मनुष्य समाज में रहता है समाज में रहकर वह अपना बेहतर जीवन निर्वहन करता है। वह समाज का सैद्धान्तिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक स्थितियों में सक्रिय रूप से सहभागिता निभाना और इससे सम्बन्धित जीवन के मूल्यों से अवगत होकर उनको जीवन शैली के रूप में स्वीकार करके जीवन यापन करता है। यह तभी सम्भव है जब व्यक्ति अपने अन्तर्निहित गुणों का व्यवहार जगत् में अनुशीलन करें।

आज हम 21वीं शदी में प्रवेश कर चुके है। शिक्षा की चुनौतियाँ ज्ञान की अनेक धाराओं के अन्वेषण की नवीनतम विद्याओं की तरफ अग्रसर हो रही है जिससे शिक्षा व्यवस्था आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के माध्यम से मार्ग को सुगम कर सकें।

समाज में मूल्यों का लगातार विघटन हो रहा है। आधुनिक काल में कुछ मूल्यों को पुनः परिभाषित तथा पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। ऐसी अनेक स्थितियाँ आती हैं जब विद्यालय में प्रदत्त तथा ग्रहीत मूल्य समाज में सामान्यतया व्यवहार में नहीं लाये जाते। मूल्यों को आत्मसात करने का कार्य शिक्षा के द्वारा और अनिवार्यतया अध्यापक शिक्षा के द्वारा प्रमुख रूप से पूरा किया जा सकता है। अध्यापक अपने व्यवहार द्वारा विद्यार्थियों को मूल्यों का आत्मसातीकरण करा सकते है। अपने शिष्यों के कल्याण के लिए पूर्णतः कटिबद्ध, परिश्रमी व सृजनशील शिक्षकों ने शिक्षा प्रणाली में व्याप्त असंतोषों व नगण्य लाभों के बावजूद अपने दायित्वों को समर्पण भाव से निभाया है। दुर्भाग्यवश अनुपयुक्त शिक्षकों के कारण हमारा शिक्षातंत्र पंगु हो गया है। हमारे अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षकों में शिक्षण प्रविणता, अभिप्रेरण कार्यमूल्य व मानवीय मूल्य विकसित करने में असफल रहते हैं। **ओड (1988)** की मान्यता है कि शिक्षकों को स्वयं के लिए मूल्यों का निर्धारण करना होगा, उन्हें इन मूल्यों के सन्दर्भ में स्वयं सचेत व सक्रिय रहना होगा। शिक्षण–प्रशिक्षण की अवधि में मूल्यों से व अपनी संस्कृति से परिचित कराना होगा, मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता विकसित करनी होगी तथा अपने उत्साह को कायम रखना होगा। जिससे कि उनकी शिक्षण कार्य की प्रेरणा कायम रह सके।

मूल्य शिक्षा, विद्यालयों में देने के लिए किन विधियों, प्रविधियों का प्रयोग किया जाय? किन मूल्यों की बच्चों को शिक्षा दी जाय? उनका स्वरूप क्या हो? मूल्य शिक्षा की व्यवस्था अलग स्वतंत्र विषय के रूप में की जाय या विविध विषयों में मूल्यों को संयुक्त कर उनकी शिक्षा दी जाय? प्रत्येक विचारक इस सम्बन्ध में अपने–अपने दृष्टिकोण को सर्वोत्तम बताते हैं किन्तु अभी तक मूल्य शिक्षा के सम्बन्ध में कोई ठोस, सर्व सम्मत्ति युक्त निर्णय नहीं लिया जा सका है।

समस्या कथन–

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों की विमा धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य एवं पारिवाारिक प्रतिष्ठा मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों की विमा धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य एवं पारिवाारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति के अनुसार, शोध में वर्णनात्मक अनुसन्धान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि से पूर्ण किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में इलाहाबाद जनपद के वित्तीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। अध्ययन में वित्तीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत् 50–50 शिक्षकों का चयन किया गया है।

उपकरण–

मूल्यों के अध्ययन के लिए डॉ0 अमित अब्राहम एवं डॉ0 रश्मि पन्त द्वारा निर्मित 'संवैधना का मूल्य मापनी' का प्रयोग किया गया है। मूल्य मापनी नौ मूल्य में विभाजित किये गये है, जो निम्नवत् है– धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवाारिक प्रतिष्ठा मूल्य।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

उद्देश्य–1 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करना।

शिक्षकों के मूल्यों के अध्ययन के लिए डॉ0 अमित अब्राहम एवं डॉ0 रश्मि पन्त द्वारा निर्मित संवैधना का मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया है। जिसके अन्तर्गत कुल 9 मूल्यों का अध्ययन किया गया है– धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, स्वास्थ्य मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य एवं पारिवाारिक प्रतिष्ठा मूल्य का अध्ययन किया गया है।

H_1 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

H_{01} वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(क) वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के धार्मिक मूल्य का अध्ययन–

तालिका संख्या–1

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के धार्मिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण

मूल्य	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर ($M_1 \sim M_2$)	मानक त्रुटि (SE_D)	टी–परीक्षण (t-test)	परिणाम
धार्मिक मूल्य	वित्तपोषित महाविद्यालय	50	27.24	4.85	0.78	1.13	0.689	असार्थक <.05-(1.98)
	स्ववित्तपोषित महाविद्यालय	50	28.02	6.36				असार्थक < .01.(2.63)

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की धार्मिक मूल्य का टी–मान 0.689 है जो कि .05 एवं .01 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 एवं 2. 63 से कम है अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के धार्मिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(ख) वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका संख्या–2

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण

मूल्य	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1 ~M_2)	मानक त्रुटि (SE_D)	टी–परीक्षण (t-test)	परिणाम
सामाजिक मूल्य	वित्तपोषित महाविद्यालय	50	30.64	4.14	0.60	0.915	0.655	असार्थक <.05-(1.98)
	स्ववित्तपोषित महाविद्यालय	50	30.04	4.98				असार्थक < .01.(2.63)

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक मूल्य का टी–मान 0.655 है जो कि .05 एवं .01 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 एवं 2.63 से कम है अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समान सामाजिक मूल्य निहित है।

(ग) वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका संख्या–3

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण

मूल्य	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M1~M2)	मानक त्रुटि (SE_D)	टी–परीक्षण (t-test)	परिणाम
स्वास्थ्य मूल्य	वित्तपोषित महाविद्यालय	50	30.74	3.93	1.88	0.813	2.31	असार्थक <.05-(1.98)
	स्ववित्तपोषित महाविद्यालय	50	28.86	4.20				सार्थक < .01.(2.63)

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की स्वास्थ्य मूल्य का टी–मान 2.31 है जो कि .01 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिए दिये गये सारणी मान 2.63 से कम है अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 0.01 सार्थकता स्तर पर वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(घ) वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के लोकतांत्रिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका संख्या–4

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के लोकतांत्रिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण

मूल्य	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (SE_D)	टी–परीक्षण (t-test)	परिणाम
लोकतांत्रिक मूल्य	वित्तपोषित महाविद्यालय	50	29.40	3.75	0.30	0.828	0.362	असार्थक <.05-(1.98)
	स्ववित्तपोषित महाविद्यालय	50	29.10	4.50				असार्थक < .01.(2.63)

तालिका संख्या 4 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की लोकतांत्रिक मूल्य का टी–मान 0.362 है जो कि .05 एवं .01 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 एवं 2.63 से कम है अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के लोकतांत्रिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात समान लोकतांत्रिक मूल्य निहित है।

(ङ) वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका संख्या–5

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण

मूल्य	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर ($M_1 \sim M_2$)	मानक त्रुटि (SE_D)	टी–परीक्षण (t-test)	परिणाम
सौन्दर्यात्मक मूल्य	वित्तपोषित महाविद्यालय	50	25.76	3.76	2.40	0.900	2.66	सार्थक <.05-(1.98)
	स्ववित्तपोषित महाविद्यालय	50	23.36	5.14				सार्थक < .01.(2.63)

तालिका संख्या 5 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की सौन्दर्यात्मक मूल्य का टी–मान 2.66 है जो कि .05 एवं .01 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर सार्थक है और शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

(च) वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के आर्थिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका संख्या–6

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के आर्थिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण

मूल्य	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर ($M_1 \sim M_2$)	मानक त्रुटि (SE_D)	टी–परीक्षण (t-test)	परिणाम
आर्थिक मूल्य	वित्तपोषित महाविद्यालय	50	24.62	4.45	0.64	0.946	0.676	असार्थक <.05-(1.98)
	स्ववित्तपोषित महाविद्यालय	50	25.26	5.00				असार्थक < .01.(2.63)

तालिका संख्या 6 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की आर्थिक मूल्य का टी–मान 0.676 है जो कि .05 एवं .01 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 एवं 2. 63 से कम है अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के आर्थिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(छ) वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका संख्या–7

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण

मूल्य	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर ($M_1 \sim M_2$)	मानक त्रुटि (SE_D)	टी–परीक्षण (t-test)	परिणाम
ज्ञानात्मक मूल्य	वित्तपोषित महाविद्यालय	50	31.84	4.04	0.46	0.862	0.533	असार्थक <.05-(1.98)
	स्ववित्तपोषित महाविद्यालय	50	32.30	4.57				असार्थक < .01.(2.63)

तालिका संख्या 7 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की ज्ञानात्मक मूल्य का टी–मान 0.533 है जो कि .05 एवं .01 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 एवं 2.63 से कम है अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(ज) वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के शक्ति मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका संख्या–8

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के शक्ति मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण

मूल्य	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर ($M_1 \sim M_2$)	मानक त्रुटि (SE_D)	टी–परीक्षण (t-test)	परिणाम
शक्ति मूल्य	वित्तपोषित महाविद्यालय	50	22.38	5.31	1.70	1.07	1.59	असार्थक <.05-(1.98)
	स्ववित्तपोषित महाविद्यालय	50	24.08	5.39				असार्थक < .01.(2.63)

तालिका संख्या 8 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की शक्ति मूल्य का टी–मान 1.59 है जो कि .05 एवं .01 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 एवं 2.63 से कम है अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(झ) वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका संख्या–9
वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण

मूल्य	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर $(M_1 \sim M_2)$	मानक त्रुटि (SE_D)	टी–परीक्षण (T-Test)	परिणाम
पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य	वित्तपोषित	50	25.90	4.16	0.200	1.03	0.193	असार्थक <.05-(1.98)
	स्ववित्तपोषित	50	25.70	6.01				असार्थक < .01.(2.63)

तालिका संख्या 9 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य का टी–मान 0.193 है जो कि .05 एवं .01 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिए दिये गये सारणी मान 1. 98 एवं 2.63 से कम है अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

9. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के धार्मिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समान सामाजिक मूल्य निहित है।
11. 0.01 सार्थकता स्तर पर वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
12. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के लोकतांत्रिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात समान लोकतांत्रिक मूल्य निहित है।
13. वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाया गया।
14. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के आर्थिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
15. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
16. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
17. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः निष्कर्षतः वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सुझाव–

श्री नागेश्वर प्रसाद शर्मा (1997) ने अपनी पुस्तक ''बिहार के ढहते विश्वविद्यालय'' शिक्षा में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनाचार तथा राजनीतियों की घुसपैठ का पर्दाफाश किया है। अंग्रेजी में कहावट है ''If Gold Rusts What will Iron do'' अर्थात् यदि सोने में मोर्चा (जंग) लगता है, तो लोहे का क्या हाल होगा। यदि शिक्षक समाज ही भ्रष्ट तरीके का उपयोग करेगा तो विद्यार्थी तथा समाज क्या सीखेगा। प्रजातंत्र का विकृत रूप हमारी शिक्षा–संस्थाओं में स्थान पा गया है। समाज तथा विद्यालयों के बीच अनवरत् अन्तःक्रिया चलती है और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। शिक्षा को समाजोपयोगी

होना चाहिए और उसकी नींव विद्यार्थियों में रखी जानी चाहिए। वास्तव में शिक्षक समाज परिवर्तन तथा समाज नियंत्रण का प्रभावी माध्यम है। इस सम्बन्ध में **श्री सलाम तुल्ला** ने लिखा है कि अध्यापन एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। अध्यापक एक अपरिपक्व, अपरिष्कृत तथा अनगढ़ बालक को रूप देता है। उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को तराशता है। यह काम अत्यन्त नाजुक एवं जोखिम भरा है। शिक्षक में नैतिक मूल्यों एवं अभिवृत्ति की शक्ति होनी चाहिए तथा तभी व्यक्तित्व निर्माण का कार्य कर सकता है। अध्यापक के व्यवसाय का सम्बन्ध व्यक्ति निर्माण से है। वह अपने छात्रों के जीवन में परिवर्तन लाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दूबे एस0 एन0 (1992); *1947 से 1986 तक भारत के मूल्य शिक्षा के क्रियांवयन का समीक्षात्मक अध्ययन*, नई दिल्ली : (पीएचडी) दिल्ली विश्वविद्यालय ।
2. पाण्ड्या, शकुन्तला (1989); *वर्तमान भारतीय शिक्षा के छात्रों पर परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन,* आर0एस0आई0ई0आर0टी0, पृष्ठ सं0 70–74।
3. यादव, राम सरन (2009); *अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन.* एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
4. वेन्स, एच0ई0डी0 (2005); *एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी इन वैलयू एजूकेशन एण्ड इट्स रिलेशनशिप,* इन बुच (एजु) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, पृष्ठ सं0 470–470।
5. वर्मा आई0 बी0 (2005); *एन इन्वेस्टीगेशन इनटू द इम्पैक्ट ऑफ ट्रेनिंग आन द वैलयूज,* इन बुच (एजू) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, सी0एस0एस0ई0, पृष्ठ संख्या 402–403।
6. शर्मा, एन0पी0 (1997); शिक्षक शिक्षा, आगरा : एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, 4/230, पृ0 33–36, यूनिवर्सिटी न्यूज, अक्टूबर 13, 1997, पृ0 26–27।
7. सलाम तुल्ला, शिक्षक शिक्षा, आगरा : एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, 4/230, पेज नं0 35–36, एजुकेशन इन सोशल कान्ट्ेक्स, पृ0 194–195।
8. सिंह, कुँवर जसमिन्दर पाल (2004); ने विद्यालय एवं महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति मूल्य एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र विभाग), पंजाब विश्वविद्यालय।

9 सिंह, धर्मराज (2009); *मानवीय मूल्यः मूल्य शिक्षण के सन्दर्भ में अध्ययन,* रिसर्च प्रेपर, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय।